

संगीत दीपिका

संगीत शिक्षा से संबंधित मार्गदर्शिका

(कक्षा 9-12 के लिए)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना द्वारा विकसित

दिशाबोध

श्री यतेंद्र कुमार पाल (भा.प्र.से)
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

श्री सुरेन्द्र कुमार
संयुक्त निदेशक (डायट)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

समन्वयक

डॉ. संतोष कुमार राणा
व्याख्याता (कला एवं शिल्प)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

मार्गदर्शिका विकास समूह

डॉ. मधु कुमारी, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट शिवहर
समीर कुमार, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट गया, पंचायती अखाड़ा, गया
यशवंत कुमार शर्मा, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट पूसा, समस्तीपुर
अजीत कुमार, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट, डुमराँव, बक्सर
शिव कुमार, शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, नारायणपुर, बिक्रम, पटना
साधना कुमारी, शिक्षिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय, ईसर टोल, विभूतिपुर, समस्तीपुर
मंगलेश कुमार, शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, बेला पंचरुखी, समस्तीपुर
आस्था दीपाली, शिक्षिका, राजकीयकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुढ़नी, मुज़फ़्फ़रपुर
संगीत मल्लिक, शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, कटका सिंहवाड़ा, दरभंगा
साहित्य मल्लिक, शिक्षक, पीएम श्री प्लस टू जयानंद उच्च विद्यालय बहेड़ा, दरभंगा
उज्ज्वल कुमार, शिक्षक, जे. एम. उच्च माध्यमिक विद्यालय, कसौर, दरभंगा
श्रुति मौसम, शिक्षिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय बसंतपुर, सुपौल
डॉ. भवानी शारदे, शिक्षिका, उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कुरथौल, फुलवारीशरीफ, पटना

शुभकामना संदेश



संगीत मानव जीवन की सहज एवं सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है। यह केवल स्वरों, तालों और लयों का संयोजन नहीं, बल्कि भावों, संवेदनाओं, संस्कारों और सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करने की एक सशक्त भाषा है। विद्यालयी शिक्षा में संगीत का समावेश विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक विकास को नई दिशा प्रदान करता है। इस मार्गदर्शिका का उद्देश्य संगीत शिक्षा को विद्यालयी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जोड़ना विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानने की एक पहल है। संगीत के माध्यम से बच्चे गायन एवं वादन के साथ उनमें एकाग्रता, अनुशासन, धैर्य, सहयोग, आत्मविश्वास, सौंदर्यबोध, संवेदनशीलता एवं अभिव्यक्ति की क्षमता भी विकसित होती है।

भारतीय संगीत परंपरा अपनी विविधता, समृद्धि और सांस्कृतिक गहराई के लिए विश्वभर में विशिष्ट स्थान रखती है। शास्त्रीय संगीत से लेकर लोकसंगीत, क्षेत्रीय गीतों से लेकर पारंपरिक वाद्ययंत्रों तक, हमारी संगीत विरासत में भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता का सुंदर प्रतिबिंब दिखाई देता है। विद्यालयी स्तर पर इस विरासत से विद्यार्थियों को परिचित कराना न केवल उनके ज्ञान का विस्तार करता है, बल्कि उन्हें अपनी माटी, संस्कृति, लोकपरंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से भी जोड़ता है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में संगीत को केवल मनोरंजन अथवा सह-पाठ्यचर्या गतिविधि तक सीमित न रखकर अधिगम के एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखने की आवश्यकता है। संगीत का अन्य विषयों के साथ समेकन सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक, अनुभवात्मक एवं आनंददायी बनाता है। गणित में ताल एवं लय, भाषा में गीत एवं कविता तथा सामाजिक विज्ञान में सांस्कृतिक एवं लोकपरंपराओं के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के विविध आयामों को सहज रूप से जोड़ा जा सकता है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि संगीत शिक्षा के लिए मार्गदर्शिका का विकास विद्यालयों में सुनियोजित संगीत शिक्षण, वाद्ययंत्रों के उचित प्रयोग, अभ्यास, प्रदर्शन, मूल्यांकन, रख-रखाव एवं सगीत संसाधनों के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक, अनुभवात्मक, आनंदमय एवं कला-समेकित बनाने में संगीत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दिशा में विद्यालयी संगीत शिक्षा को सुदृढ़ करने की पहल विद्यार्थियों की अंतर्निहित प्रतिभाओं को अवसर देने के साथ-साथ शिक्षा को जीवन और संस्कृति से जोड़ने का भी कार्य करेगी।

मुझे विश्वास है कि आपके दूरदर्शी नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से संगीत शिक्षा विद्यालयी शिक्षा का एक सशक्त एवं अभिन्न अंग बनेगी। यह पहल न केवल विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि एवं कौशल का विकास करेगी, बल्कि बिहार की समृद्ध लोक एवं सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

संगीत के माध्यम से सीखने, सृजन करने और संवेदनशील बनने की यह यात्रा निश्चित रूप से हमारे विद्यालयों को अधिक जीवंत, आनंदपूर्ण और रचनात्मक बनाएगी।

इस मार्गदर्शिका के निर्माण में योगदान देने वाले सभी विषय विशेषज्ञों को मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि बिहार के विद्यालय इस पहल को अपने स्थानीय संदर्भों, रचनात्मक प्रयोगों और सामूहिक सहभागिता के साथ आगे बढ़ाएँगे।

यतेंद्र कुमार पाल (भा.प्र.से)
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
पटना

शुभकामना संदेश



संगीत मनुष्य की उन अनुभूतियों को स्वर देता है, जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है। यह केवल सुर, ताल और लय का संयोजन नहीं, बल्कि संवेदना, अनुशासन, सृजन और आत्म-अभिव्यक्ति की ऐसी यात्रा है, जो विद्यार्थी के भीतर के संसार को समृद्ध करती है। विद्यालयी शिक्षा में संगीत का स्थान इसलिए महत्वपूर्ण है कि यह मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ मन को संवेदनशील और व्यक्तित्व को संतुलित बनाता है। विद्यार्थियों के जीवन में अपनी रुचियों, क्षमताओं और पहचान को समझने का महत्वपूर्ण चरण होता है। ऐसे समय में संगीत उन्हें केवल एक कला सीखने का अवसर नहीं देता, बल्कि सुनने, समझने, अभ्यास करने, सृजन करने, सहयोग करने और अपनी बात प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने की क्षमता भी प्रदान करता है।

इसी शैक्षिक दृष्टि को केंद्र में रखते हुए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना द्वारा कक्षा 9 से 12 के लिए संगीत शिक्षा से संबंधित इस मार्गदर्शिका का विकास एक सराहनीय पहल है। यह मार्गदर्शिका संगीत को केवल पाठ्यविषय के रूप में देखने के बजाय उसे अनुभव, अभिव्यक्ति और सृजनात्मक अधिगम से जोड़ने का प्रयास है।

हमारी भारतीय संगीत परंपरा में शास्त्रीय संगीत से लेकर लोक संगीत तक ज्ञान, संस्कृति और जीवनानुभव की एक समृद्ध विरासत निहित है। बिहार की अपनी लोक एवं सांगीतिक परंपराएँ इस विरासत को और अधिक विशिष्ट बनाती हैं। विद्यालयों में संगीत शिक्षा के माध्यम से जब विद्यार्थी इन परंपराओं को सुनते, समझते, प्रस्तुत करते और उनमें कुछ नया रचते हैं, तब शिक्षा केवल जानकारी का माध्यम नहीं रहती, बल्कि विरासत से भविष्य तक की एक जीवंत यात्रा बन जाती है।

मुझे विश्वास है कि यह मार्गदर्शिका शिक्षकों को संगीत शिक्षण में प्रयोग, नवाचार और गतिविधि-आधारित अधिगम के लिए प्रेरित करेगी तथा विद्यार्थियों को केवल अच्छे श्रोता और प्रस्तोता ही नहीं, बल्कि सृजनशील, संवेदनशील और सांस्कृतिक रूप से जागरूक नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ाएगी।

इस सार्थक एवं रचनात्मक पहल के लिए मार्गदर्शिका के निर्माण से जुड़े सभी विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। मेरी शुभकामना है कि यह मार्गदर्शिका विद्यालयों में संगीत शिक्षा को नई ऊर्जा, नई दृष्टि और नई दिशा प्रदान करे।

सुरेन्द्र कुमार
संयुक्त निदेशक (डायट)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

अनुक्रम

1.	प्रस्तावना एवं उद्देश्य	11
2.	विद्यालय में उपलब्ध कराये गए वाद्ययंत्रों की सूची	14
3.	संगीत शिक्षक की भूमिका	15
4.	संगीत शिक्षक की प्रमुख जिम्मेदारियाँ	16
5.	संगीत शिक्षण हेतु अनुकूल वातावरण	17
6.	समय योजना एवं समय-सारणी	20
7.	शिक्षण पद्धतियाँ एवं कला-समेकित दृष्टिकोण	22
8.	विभिन्न विषयों में संगीत का समेकन	26
9.	आकलन	30
10.	संगीत एवं कला समेकित शिक्षा हेतु आकलन रुब्रिक्स	32
11.	आकलन हेतु चेकलिस्ट	33
12.	अधिगम प्रतिफल	34
13.	प्रस्तुति के लिए मंचीय अवसर	35
14.	प्रधानाध्यापक की भूमिका	36
15.	प्रधानाध्यापक हेतु सुझाव	37
16.	क्या करें	38
17.	क्या न करें	39
18.	प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न	40
19.	संदर्भ सूची	41



प्रस्तावना

संगीत मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन एवं सार्वभौमिक अभिव्यक्तियों में से एक है। यह भाषा, जाति, धर्म और सीमाओं से परे जाकर मन-मस्तिष्क को जोड़ने वाला माध्यम है। विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में संगीत को केवल एक 'सह-शैक्षिक गतिविधि' या मनोरंजन का साधन मानना एक अधूरी दृष्टि है वास्तव में यह विद्यार्थियों के मस्तिष्क, भावनाओं, सामाजिक कौशल एवं सांस्कृतिक पहचान के समग्र विकास का एक सशक्त माध्यम है।

संगीत एक विषय होने साथ-साथ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल उसकी सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता को निखारता है, बल्कि उसमें आत्मविश्वास, अनुशासन, रचनात्मकता, सहयोग की भावना तथा अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति सम्मान का भाव भी विकसित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने कला शिक्षा के साथ-साथ कला समेकित अधिगम तथा अनुभवात्मक शिक्षण को पाठ्यक्रम का अनिवार्य व केंद्रीय अंग बनाने पर भी बल दिया है। संगीत-शिक्षा बच्चों में स्मृति, एकाग्रता, भाषा-कौशल, गणितीय-तार्किक क्षमता तथा भावनात्मक बुद्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह मार्गदर्शिका बिहार के विद्यालयों हेतु संगीत शिक्षा मार्गदर्शिका 'संगीत दीपिका' के रूप में तैयार की गई है। जिसका उद्देश्य विद्यालयों में संगीत शिक्षण को व्यवस्थित, समावेशी एवं प्रभावी बनाना है।

इस मार्गदर्शिका में संगीत शिक्षा के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समग्र रूप से समाहित किया गया है। प्रारंभ में संगीत कक्ष के भौतिक एवं मानसिक वातावरण पर चर्चा की गई है, जो एक ऐसा सुरक्षित एवं प्रेरणादायी स्थान होना चाहिए जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी बिना संकोच अपनी प्रतिभा एवं रचनात्मकता को अभिव्यक्त कर सके। इसके साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि कक्षा में स्वर, ताल, लय जैसी बुनियादी अवधारणाओं के साथ शास्त्रीय एवं लोक संगीत की समझ कैसे विकसित किया जाए तथा मंचीय प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व एवं आत्मविश्वास कैसे विकसित किया जा सकता है।

इसके साथ ही "सुनो-समझो-अभ्यास करो-प्रस्तुत करो" की अनुभवात्मक शिक्षण प्रक्रिया, कला-समेकित शिक्षण के माध्यम से अन्य विषयों से संगीत का जुड़ाव, विद्यालय प्रशासन की भूमिका और उत्तरदायित्व, तथा सतत एवं समग्र आकलन की पद्धति पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। अंत में शिक्षकों एवं विद्यालयों के लिए कुछ आवश्यक "क्या करें और क्या न करें" जैसे महत्वपूर्ण बिंदु भी सुझाए गए हैं, ताकि संगीत शिक्षण सदैव सकारात्मक, समावेशी एवं बाल-केंद्रित बना रहे।

यह मार्गदर्शिका इस विश्वास के साथ तैयार की गई है कि यदि विद्यालयों में संगीत शिक्षा को सही दिशा, संसाधन एवं दृष्टिकोण के साथ लागू किया जाए, तो यह न केवल विद्यार्थियों में कला के प्रति स्थायी रुचि जगाएगी बल्कि विद्याथियों में संवेदनशीलता, आत्मविश्वास एवं सांस्कृतिक रूप से जागरूक नागरिक बनाने में भी सहायक सिद्ध होगी। आशा है कि यह दिशा-निर्देश शिक्षकों, विद्यालय प्रशासन एवं संबंधित सभी हितधारकों के लिए एक उपयोगी संदर्भ सामग्री सिद्ध होगी।

यह मार्गदर्शिका विशेष रूप से संगीत शिक्षकों के लिए इसलिए निर्मित की गई है कि वे न केवल उन विद्यार्थियों का अध्ययन-अध्यापन कराए जो संगीत को विषय के रूप में चुनकर उसमें अपना भविष्य बनाना चाहते हैं, बल्कि विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों के भीतर भी संगीत को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में प्रभावी रूप से प्रयोग करने की सहज समझ विकसित कर सकें।

यह दस्तावेज़ विद्यालय में संगीत शिक्षण की एक स्पष्ट, संरचित एवं व्यावहारिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिसमें कक्षा-वातावरण से लेकर शिक्षण-पद्धति, मंच-प्रदर्शन, आकलन एवं प्रशासनिक सहयोग के सभी पहलू सम्मिलित हैं ताकि संगीत शिक्षा सुसंगत, गुणवत्तापूर्ण तथा प्रत्येक विद्यार्थी हेतु सुलभ बन सके।



उद्देश्य

संगीत शिक्षा केवल गायन या वादन के प्रशिक्षण के साथ-साथ विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तित्व विकास का प्रभावी माध्यम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप संगीत शिक्षा अनुभवात्मक, समावेशी एवं कौशल-आधारित अधिगम को प्रोत्साहित करती है तथा विद्यार्थियों में जीवनोपयोगी कौशलों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(क) संज्ञानात्मक विकास

- स्वर, लय एवं ताल के नियमित अभ्यास से मस्तिष्क के दोनों गोलार्द्धों के बीच समन्वय (Brain Coordination) सुदृढ़ होता है।
- स्मरण-शक्ति, एकाग्रता, श्रवण-कौशल तथा अवलोकन-क्षमता का विकास होता है।
- पैटर्न पहचान, तार्किक चिंतन एवं समस्या-समाधान की क्षमता विकसित होती है।
- गणित, भाषा एवं विज्ञान जैसे विषयों के अधिगम में सहायता मिलती है।
- सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता है तथा निर्णय लेने की क्षमता सशक्त होती है।

(ख) भावनात्मक विकास

- संगीत भावनाओं की सकारात्मक, संतुलित एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है।
- तनाव, चिंता एवं परीक्षा-दबाव को कम कर मानसिक स्वास्थ्य एवं भावनात्मक संतुलन को सुदृढ़ करता है।
- आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान एवं मंच-प्रस्तुति कौशल का विकास करता है।
- धैर्य, आत्म-नियंत्रण, संवेदनशीलता एवं आत्म-अनुशासन जैसे गुणों का विकास करता है।
- संगीत के माध्यम से विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध एवं भावनात्मक परिपक्वता विकसित होती है।

(ग) सामाजिक विकास

- समूह गायन, वादन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से सहयोग, समन्वय एवं टीम-भावना विकसित होती है।
- अनुशासन, समयपालन, नेतृत्व क्षमता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है।
- सक्रिय श्रवण, पारस्परिक सम्मान एवं प्रभावी संवाद कौशल का विकास होता है।
- विविध सामाजिक, भाषायी एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के बीच समावेशिता एवं सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा मिलता है।
- सामूहिक प्रस्तुतियों के माध्यम से सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहन मिलता है।

(घ) सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विकास

- भारतीय शास्त्रीय, लोक एवं क्षेत्रीय संगीत परंपराओं के प्रति समझ, सम्मान एवं गर्व की भावना विकसित होती है।
- स्थानीय लोककला एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति जागरूकता बढ़ती है।
- राष्ट्रगान, राष्ट्रीय गीत, राज्य गीत एवं प्रेरणादायक सांस्कृतिक रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, संवैधानिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित होती है।
- भारतीय संस्कृति से जुड़ाव के साथ-साथ विश्व की विविध संगीत परंपराओं के प्रति सम्मान एवं वैश्विक दृष्टिकोण विकसित होता है।
- संगीत के माध्यम से विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान, सौंदर्यबोध एवं "विविधता में एकता" की भावना सुदृढ़ होती है।

(ङ) व्यक्तित्व एवं जीवन कौशल विकास

- संगीत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं प्रभावी अभिव्यक्ति का विकास करता है।
- नियमित अभ्यास के माध्यम से अनुशासन, धैर्य, दृढ़ता एवं लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता विकसित होती है।
- रचनात्मकता, नवाचार, निर्णय-क्षमता एवं आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन मिलता है।
- जीवन कौशल जैसे सहयोग, संचार, सहानुभूति एवं समस्या-समाधान का विकास होता है।
- संगीत विद्यार्थियों को आजीवन सीखने तथा संतुलित एवं संवेदनशील नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।







विद्यालय में उपलब्ध कराये गए वाद्ययंत्रों की सूची

क्रमांक	वाद्ययंत्र का नाम	संख्या
1	हारमोनियम	1
2	तबला सेट	1
3	ढोलक / नाल	1
4	61-की वाला कीबोर्ड	1
5	पी.ए. सिस्टम (स्पीकर एवं माइक्रोफोन)	1
6	वर्जिन प्लास्टिक झीका (बड़ा, 10 झंकार/जिंगल)	2
7	डफली (टैम्बोरिन)	2
8	वर्जिन प्लास्टिक झीका (छोटा, 5 झंकार/जिंगल)	2
9	पीतल का मंजीरा	2
10	बाँसुरी	2
11	घुँघरू (एक जोड़ी, प्रत्येक पायल में 25 घुँघरू)	2








संगीत शिक्षक की भूमिका

संगीत शिक्षक संगीत शिक्षा को प्रभावी और आनंददायक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संगीत शिक्षक केवल विद्यार्थियों को गीत गाना या वाद्ययंत्र बजाना नहीं सिखाते, बल्कि उनकी रुचि, प्रतिभा और रचनात्मकता को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करते हैं। शिक्षक का व्यवहार सहयोगपूर्ण और प्रोत्साहन देने वाला होना चाहिए, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी बिना झिझक संगीत गतिविधियों में भाग ले सके।



संगीत शिक्षक की प्रमुख भूमिका विद्यार्थियों को स्वर, लय, ताल, गायन, वादन और संगीत के मूल सिद्धांतों का सरल एवं व्यावहारिक तरीके से ज्ञान देना है। शिक्षक को विद्यार्थियों की आयु, रुचि और क्षमता के अनुसार संगीत गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। नियमित अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों में संगीत कौशल का विकास किया जाना चाहिए।



संगीत शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने और अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर मिले। केवल अच्छा गाने या वाद्ययंत्र बजाने वाले विद्यार्थियों पर ध्यान न देकर सभी विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुसार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समूह गायन, एकल प्रस्तुति, वाद्ययंत्र वादन, ताल एवं लय की गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को विविध अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं।



मंचीय प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना भी संगीत शिक्षक की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। शिक्षक को विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास, उचित मार्गदर्शन और सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए। प्रस्तुति के दौरान होने वाली गलतियों को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा मानते हुए विद्यार्थियों को सुधार के लिए प्रेरित करना चाहिए।



संगीत शिक्षक विद्यार्थियों में भारतीय संगीत, लोकगीतों, स्थानीय संगीत परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान की भावना भी विकसित कर सकते हैं। इसके साथ ही संगीत को अन्य विषयों और विद्यालयी गतिविधियों से जोड़कर शिक्षण-अधिगम को अधिक रोचक और प्रभावी बनाया जा सकता है।



संगीत शिक्षक की प्रमुख जिम्मेदारियाँ

1. विद्यार्थियों की संगीत संबंधी रुचि और प्रतिभा को पहचानना



2. स्वर, लय, ताल, गायन और वादन का नियमित अभ्यास कराना

3. विद्यार्थियों की आयु और क्षमता के अनुसार गतिविधियों की योजना बनाना

4. सभी विद्यार्थियों को समान अवसर और प्रोत्साहन देना

5. मंचीय प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना



6. विद्यार्थियों की प्रगति का निरंतर आकलन करना

7. सकारात्मक और रचनात्मक प्रतिक्रिया देना

8. संगीत गतिविधियों में अनुशासन और नियमित अभ्यास की आदत विकसित करना

9. वाद्ययंत्रों एवं संगीत सामग्री का उचित उपयोग और रख-रखाव सुनिश्चित करना

10. भारतीय एवं स्थानीय संगीत परंपराओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना



11. विद्यालय प्रशासन और अन्य शिक्षकों के साथ समन्वय स्थापित करना

12. विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता और सहयोग की भावना विकसित करना



संगीत शिक्षण हेतु अनुकूल वातावरण

संगीत कक्ष विद्यालय का ऐसा शिक्षण-अधिगम केंद्र होना चाहिए, जहाँ विद्यार्थी आनंदपूर्ण वातावरण में गायन, वादन, अभ्यास, प्रस्तुति एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त करे। एक सुव्यवस्थित, संसाधन-संपन्न एवं प्रेरणादायी संगीत कक्ष विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, अनुशासन, सौंदर्यबोध तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करता है। अतः संगीत कक्ष में आवश्यक भौतिक संसाधनों, शिक्षण सामग्री एवं अनुकूल वातावरण की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

आवश्यक व्यवस्थाएं

स्वच्छ एवं अनुकूल वातावरण

- कक्ष स्वच्छ, हवादार, प्रकाशयुक्त एवं शांत हो।
- सुरक्षित एवं सकारात्मक शिक्षण वातावरण सुनिश्चित हो।



बैठने की व्यवस्था

- कारपेट/मैट की व्यवस्था हो।
- समूह आधारित गायन-वादन हेतु पर्याप्त स्थान हो।



वाद्ययंत्र संरक्षण

- सुरक्षित पारदर्शी अलमारी/रैक उपलब्ध हो।
- प्रत्येक वाद्ययंत्र का निर्धारित स्थान हो।

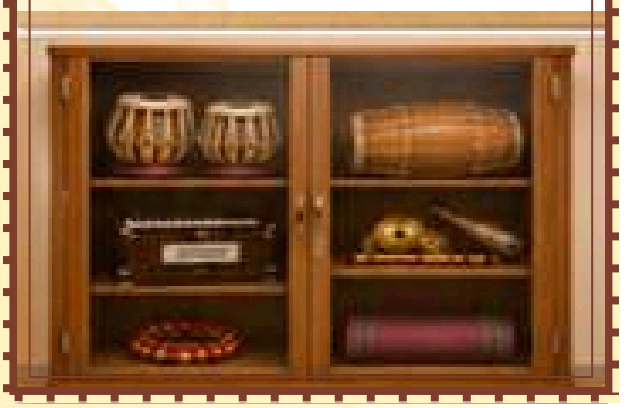

डिजिटल संसाधन

- व्हाइटबोर्ड/स्मार्टबोर्ड उपलब्ध हो।
- प्रोजेक्टर, साउंड सिस्टम एवं आवश्यक विद्युत सुविधाएँ

(जैसे एक्सटेंशन बोर्ड, पर्याप्त विद्युत सॉकेट, HDMI केबल, इंटरनेट कनेक्टिविटी) हों।



प्रेरणादायी प्रदर्शन

- प्रसिद्ध संगीतज्ञों एवं स्थानीय लोक कलाकारों के चित्र एवं परिचय प्रदर्शित हों।
- बिहार की लोक-संगीत परंपरा को स्थान दिया जाए।






शारदा सिन्हा


पं. सरयू पाठक


पं. रामचतुर मलिक

वाद्ययंत्र प्रदर्शनी

- वाद्ययंत्रों के चित्र, नाम एवं वर्गीकरण प्रदर्शित हों।
- जहाँ संभव हो, वास्तविक वाद्ययंत्र भी प्रदर्शित किए जाएँ।



संगीत शब्दावली कॉर्नर

- स्वर, ताल, लय, राग, सप्तक, अलंकार एवं पारिभाषिक शब्दावली आधारित चार्ट, फ़्लैश कार्ड, आदि प्रदर्शित हो।



देशभक्ति एवं सांस्कृतिक सामग्री

- राष्ट्रगान, राष्ट्रीय गीत, बिहार राज्य प्रार्थना एवं बिहार राज्य गीत प्रदर्शित हों।



प्रस्तुति मंच

- विद्यार्थियों के अभ्यास एवं प्रस्तुति हेतु छोटा मंच उपलब्ध हो।
- आवश्यक प्रस्तुति उपकरण (साउंड सिस्टम, माइक, आदि) उपलब्ध हों।

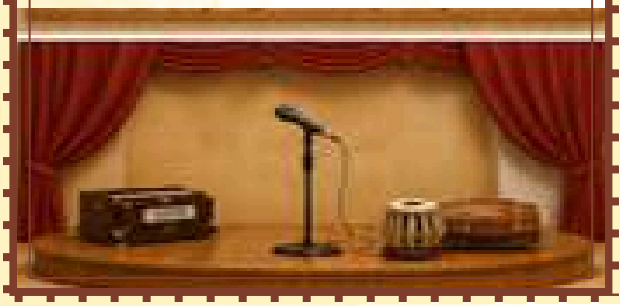

रचनात्मक प्रदर्शन बोर्ड

- विद्यार्थियों के कार्य, पोस्टर, स्वर-लिपि एवं उपलब्धियाँ प्रदर्शित की जाएँ।



सूचना पट्ट

- गतिविधियों, प्रतियोगिताओं एवं उपलब्धियों की नियमित जानकारी प्रदर्शित की जाए।



लघु संगीत पुस्तकालय

- संगीत संबंधी पुस्तकें, बालगीत संग्रह, लोकगीत, महान संगीतज्ञों की जीवनियाँ, स्वर-लिपि पुस्तकें एवं पत्रिकाओं सहित एक लघु संगीत पुस्तक कॉर्नर विकसित किया जाए।



स्वच्छता एवं अनुशासन

- संगीत कक्ष के बाहर सुव्यवस्थित जूता-चप्पल रैक की व्यवस्था हो।
- विद्यार्थी संगीत कक्ष में प्रवेश से पूर्व अपने जूते-चप्पल निर्धारित स्थान पर रखें।



सुरक्षा एवं रख-रखाव

- विद्युत एवं वाद्ययंत्र सुरक्षा मानकों का पालन हो।
- वाद्ययंत्रों के संरक्षण एवं सही उपयोग पर बल दिया जाए।



समावेशी एवं कला समेकित वातावरण

- संगीत कक्ष में कला समेकित शिक्षण (Art Integrated Learning) को बढ़ावा देने हेतु संबंधित शिक्षण सामग्री उपलब्ध हो।
- कक्ष ऐसा हो जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी बिना किसी भेदभाव के सक्रिय सहभागिता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति कर सके।



प्रेरणादायी शिक्षण वातावरण

- संगीत कक्ष का प्रत्येक भाग विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि, अनुशासन, सौंदर्यबोध, सहयोग, आत्मविश्वास एवं सांस्कृतिक चेतना विकसित करने वाला हो जो उन्हें नियमित अभ्यास एवं उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए प्रेरित करे।



समय योजना एवं समय-सारणी

संगीत शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सृजनात्मक, समावेशी एवं अनुभवात्मक बनाने का एक प्रभावी माध्यम है। इसलिए विद्यालय के वार्षिक कैलेंडर का निर्माण करते समय प्रधानाध्यापक, संगीत शिक्षक तथा अन्य विषय-शिक्षक सामूहिक रूप से ऐसी योजना तैयार करें, जिससे विद्यालय की प्रत्येक नियमित एवं सह-शैक्षणिक गतिविधि में संगीत एवं कला समेकित अधिगम का स्वाभाविक समावेश सुनिश्चित हो सके। विद्यालय में उपलब्ध विभिन्न समयावधियों का योजनाबद्ध उपयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है:

1. प्रार्थना सभा

प्रार्थना सभा विद्यालय के प्रत्येक दिवस का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी प्रारम्भिक मंच है। यदि इसे विषयवस्तु आधारित शिक्षण एवं कला समेकित अधिगम से जोड़ा जाए तो यह विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का प्रभावी माध्यम बन सकती है।

- बिहार राज्य प्रार्थना, बिहार राज्य गीत, राष्ट्रीय गीत एवं राष्ट्रगान के अतिरिक्त प्रतिदिन विषयानुकूल गीत, प्रेरक भजन, लोकगीत, देशभक्ति गीत, पर्यावरण गीत, नैतिक गीत अथवा संस्कृत नीति श्लोकों का समूह गायन कराया जा सकता है।
- सप्ताह अथवा माह की थीम के अनुरूप विशेष प्रस्तुति, वाद्य वादन, स्वराभ्यास एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- इससे विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, अनुशासन, समूह भावना एवं सौन्दर्यबोध का विकास तथा विद्यालय में सकारात्मक एवं आनंदमय वातावरण निर्मित होगा।

2. खाली घंटी

विद्यालय में उपलब्ध किसी विषय की रिक्त कक्षा को रचनात्मक अधिगम के अवसर के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

- संगीत शिक्षक अन्य विषय-शिक्षकों के साथ समन्वय स्थापित कर कला समेकित गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं।
- कविता का गायन, ताल के माध्यम से गणितीय अवधारणाएँ, विज्ञान विषय पर गीत, सामाजिक विज्ञान से जुड़े लोकगीत अथवा भाषा शिक्षण में लयात्मक गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं।
- इस समय का उपयोग रियाज़, समूह-गान, वाद्य-अभ्यास, लघु प्रस्तुतियों, रचनात्मक लेखन तथा परियोजना आधारित अधिगम के लिए भी किया जा सकता है।

3. विद्यालयीय आयोजन एवं विशेष दिवस

विद्यालय के वार्षिक कैलेंडर में राष्ट्रीय पर्व, अंतरराष्ट्रीय दिवस, सांस्कृतिक उत्सव एवं विद्यालयीय समारोहों का विशेष स्थान होता है। इन अवसरों को संगीत एवं कला आधारित अधिगम से जोड़कर विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, परम्पराओं एवं संवैधानिक मूल्यों से परिचित कराया जा सकता है।

उदाहरणार्थ:

- **राष्ट्रीय पर्व :** स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, आदि।
- **विशेष दिवस :** शिक्षक दिवस, बाल दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व संगीत दिवस, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, आदि।

- **सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्व :** होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, बसंत उत्सव, ओणम, गुरु पर्व आदि।

इन अवसरों पर:

- विषयानुकूल गीत, लोकगीत
- समूहगान
- नृत्य-नाटिका एवं लोकनृत्य
- संगीत आधारित नाट्य प्रस्तुति
- पोस्टर, चित्रकला एवं रचनात्मक प्रदर्शनियाँ
- स्थानीय लोककला एवं लोकसंगीत का मंचन

आयोजित किए जा सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान, राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की भावना विकसित होती है।

4. यूथ क्लब/इको क्लब

यूथ/ इको क्लब विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक प्रभावी मंच है। प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर मिलना चाहिए। इसमें निम्न गतिविधियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं जैसे- पर्यावरण गीत, स्वरचित कविता, गीत प्रस्तुति, समूहगान एवं एकल गायन, लोकगीत एवं लोकनृत्य, आदि। प्रत्येक सप्ताह अथवा प्रत्येक पखवाड़े में आयोजित बाल सभा को अनुभवात्मक अधिगम, नेतृत्व विकास, मंच संचालन, आत्मविश्वास एवं रचनात्मकता के विकास का माध्यम बनाया जा सकता है।

5. भोजनावकाश

भोजनावकाश केवल विश्राम का समय न होकर विद्यालय में सकारात्मक भावनात्मक वातावरण निर्मित करने का अवसर भी है।

- विद्यार्थियों की आयु के अनुरूप मधुर, प्रेरणादायी एवं भारतीय सांस्कृतिक संगीत का प्रसारण किया जा सकता है।
- लोकसंगीत, वाद्य संगीत, प्रकृति संगीत अथवा हल्के वाद्य संयोजन बच्चों में मानसिक शांति एवं भावनात्मक संतुलन विकसित करने में सहायक होते हैं।
- शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि संतुलित एवं मधुर संगीत विद्यार्थियों की एकाग्रता, ग्रहणशीलता एवं तनाव प्रबंधन में सकारात्मक भूमिका निभाता है।

6. प्रतियोगिताएँ एवं विशेष गतिविधियाँ

विद्यालय में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संगीत एवं कला समेकित शिक्षा के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। जैसे- अंतर-विद्यालय प्रतियोगिता, समूह-गान प्रतियोगिता, लोकसंगीत एवं लोकनृत्य प्रतियोगिता, संगीत प्रश्नोत्तरी, कला एवं संस्कृति आधारित परियोजनाएँ, आदि।

समय-सारणी

प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक घंटी संगीत विषय हेतु अनिवार्य रूप से दिया जाना चाहिए जिसमें सभी विद्यार्थी (जिन्होंने संगीत को विषय के रूप में चयन किया हो अथवा संगीत को विषय के रूप में चयन नहीं किया हो) सीखेंगें।

शिक्षण पद्धतियाँ एवं कला-समेकित दृष्टिकोण

संगीत एक अभ्यास-प्रधान, प्रायोगिक, अनुभवात्मक एवं सहभागितापरक विषय है। इसका शिक्षण केवल सैद्धान्तिक ज्ञान तक सीमित न होकर विद्यार्थियों को स्वर, लय, ताल, गायन, वादन, सृजन तथा मंचीय प्रस्तुति के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है। अतः विद्यालयों में संगीत शिक्षण की पद्धति विद्यार्थी-केंद्रित, गतिविधि-आधारित, समावेशी, प्रौद्योगिकी-सहायक एवं सतत अभ्यास पर आधारित होनी चाहिए।



श्रवण-अनुकरण पद्धति
(Listening and Imitation Method)

भारतीय संगीत की परंपरा में श्रवण एवं अनुकरण को शिक्षण का सबसे प्रभावी आधार माना गया है। शिक्षक सर्वप्रथम किसी भजन, गीत, लोकगीत, राग, स्वर-अलंकार, ताल अथवा वाद्य-वादन का आदर्श प्रस्तुत करें। इसके पश्चात विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनकर उसी का क्रमिक अभ्यास करें।

मुख्य विशेषताएँ :

- शिक्षक आदर्श प्रस्तुति दें।
- विद्यार्थी सुनकर स्वर, लय एवं उच्चारण का अनुकरण करें।
- त्रुटियों का तत्काल सुधार एवं पुनः अभ्यास कराया जाए।
- सरल से जटिल की ओर क्रमिक प्रगति सुनिश्चित की जाए।

प्रदर्शनात्मक शिक्षण
(Demonstration Method)

संगीत में अनेक कौशल केवल देखकर एवं करके सीखे जा सकते हैं। शिक्षक प्रत्येक नई तकनीक, स्वराभ्यास, ताल, वादन शैली अथवा शारीरिक मुद्रा (Posture) का स्वयं प्रदर्शन करें तथा विद्यार्थियों से उसका अभ्यास कराएँ।

मुख्य विशेषताएँ :

- गायन एवं वादन की सही तकनीक का प्रदर्शन।
- सही बैठने, श्वास नियंत्रण एवं हाथों की स्थिति का अभ्यास।
- प्रत्येक कौशल का चरणबद्ध प्रदर्शन एवं पुनरावृत्ति।
- व्यक्तिगत एवं सामूहिक अभ्यास का समन्वय।





गतिविधि–आधारित शिक्षण
(Activity–Based Learning)

संगीत शिक्षण को रोचक एवं जीवंत बनाने हेतु विद्यार्थियों को विविध गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागी बनाया जाए। सीखने की प्रक्रिया अनुभव आधारित हो जिससे प्रत्येक विद्यार्थी सक्रिय रूप से जुड़ सके।

उदाहरण :

- समूहगान एवं समूहवादन
- ताल एवं लय खेल
- संगीत प्रश्नोत्तरी
- अन्ताक्षरी एवं स्वर पहचान गतिविधियाँ
- लोकगीत एवं लोकनृत्य गतिविधियाँ
- विद्यालय स्तरीय संगीत प्रतियोगिताएँ
- प्रार्थना सभा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रस्तुति

अभ्यास पद्धति
Practice Method / Riyaz)

संगीत में नियमित रियाज़ सफलता का मूल आधार है। प्रत्येक कक्षा में निर्धारित समय स्वर साधना, लय, ताल एवं गीतों के नियमित अभ्यास के लिए सुनिश्चित किया जाए।

अभ्यास के प्रमुख घटक :

- स्वर साधना एवं अलंकार
- आरोह–अवरोह अभ्यास
- ताल एवं लय अभ्यास
- गीत एवं रचनाओं की पुनरावृत्ति
- वाद्य यंत्रों का नियमित अभ्यास
- व्यक्तिगत एवं सामूहिक रियाज़





सहगामी अधिगम
(Peer Learning / Collaborative Learning)

विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में सीखने एवं एक-दूसरे को सिखाने के अवसर प्रदान किए जाएँ। सक्षम विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के सीखने में सहयोग करें।

मुख्य विशेषताएँ :

- समूहगान एवं समूहवादन
- सहपाठी द्वारा अभ्यास का मार्गदर्शन
- सामूहिक प्रस्तुति एवं सहयोगात्मक अभ्यास
- समूह चर्चा एवं रचनात्मक गतिविधियाँ



दृश्य-श्रव्य शिक्षण पद्धति (Audio-Visual Method)

आधुनिक तकनीक का उपयोग संगीत शिक्षण को अधिक प्रभावी, आकर्षक एवं अनुभवात्मक बनाता है। डिजिटल संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थियों को विविध संगीत शैलियों एवं श्रेष्ठ कलाकारों से परिचित कराया जा सकता है।

उपयोगी संसाधन :

- स्मार्ट बोर्ड एवं प्रोजेक्टर
- ऑडियो एवं वीडियो रिकॉर्डिंग
- डिजिटल तानपुरा एवं मेट्रोनोम
- शैक्षिक संगीत ऐप एवं ई-सामग्री
- महान कलाकारों की प्रस्तुतियाँ
- रिकॉर्डेड स्वर एवं ताल अभ्यास

परियोजना-आधारित शिक्षण (Project-Based Learning)

विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन एवं स्थानीय संस्कृति से जुड़े परियोजना कार्य दिए जाएँ, जिससे वे खोज, अध्ययन, प्रस्तुति एवं सृजनात्मक कार्यों के माध्यम से संगीत का गहन ज्ञान प्राप्त कर सकें।

संभावित परियोजनाएँ :

- स्थानीय लोकगीत एवं लोकवाद्यों का दस्तावेजीकरण
- किसी महान संगीतज्ञ का जीवन एवं योगदान
- भारतीय शास्त्रीय एवं लोक संगीत की तुलना
- विभिन्न राज्यों के लोक संगीत का अध्ययन
- विद्यालय संगीत कार्यक्रम की योजना एवं संचालन
- वाद्य यंत्रों का मॉडल, पोस्टर या डिजिटल प्रस्तुतीकरण





कला समेकित एवं अंतर्विषयी शिक्षण (Art-Integrated & Interdisciplinary Learning)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप संगीत को अन्य विषयों से जोड़कर शिक्षण किया जाए ताकि विद्यार्थियों का अधिगम अधिक अर्थपूर्ण एवं अनुभवात्मक बन सके।

उदाहरण :

- गणित में ताल एवं लय के माध्यम से भिन्न एवं पैटर्न
- भाषा में गीत, कविता एवं उच्चारण अभ्यास
- सामाजिक विज्ञान में लोक संगीत एवं सांस्कृतिक विरासत
- विज्ञान में ध्वनि, कंपन एवं ध्वनि तरंगें
- कला एवं नृत्य के साथ समेकित गतिविधियाँ



अनुभवात्मक एवं मंच-आधारित शिक्षण (Experiential & Performance-Based Learning)

विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर पर नियमित मंचीय अवसर प्रदान किए जाएँ ताकि वे सीखी हुई सामग्री का आत्मविश्वासपूर्वक प्रदर्शन कर सकें।

गतिविधियाँ :

- चेतना सत्र में संगीत प्रस्तुति
- मासिक संगीत सभा
- संगीत उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम
- वाद्य एवं गायन प्रदर्शन
- समुदाय एवं अभिभावकों के समक्ष प्रस्तुति

समावेशी एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण (Inclusive & Learner-Centred Approach)

प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, सीखने की गति एवं विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण किया जाए। सभी विद्यार्थियों को समान अवसर एवं प्रोत्साहन प्रदान किया जाए।

मुख्य बिंदु :

- प्रत्येक विद्यार्थी की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित हो।
- भिन्न अधिगम स्तरों के अनुरूप गतिविधियाँ आयोजित हों।
- सकारात्मक एवं प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण विकसित किया जाए।
- निरंतर प्रोत्साहन एवं फीडबैक दी जाए।





सतत एवं समग्र शिक्षण (Continuous and Holistic Learning)

संगीत शिक्षा एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षण केवल परीक्षा तक सीमित न होकर वर्षभर चलने वाली सतत प्रक्रिया हो।

शिक्षण में निम्न सभी आयामों को समान महत्व दिया जाए:

- ज्ञान (Knowledge)
- कौशल (Skill)
- अभ्यास (Practice)
- रचनात्मकता (Creativity)
- प्रस्तुतीकरण (Performance)
- सहयोग (Collaboration)
- सांस्कृतिक समझ (Cultural Appreciation)
- नैतिक एवं सौन्दर्यपरक मूल्य (Values and Aesthetics)

विभिन्न विषयों में संगीत का समेकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को बहुविषयक, अनुभवात्मक तथा समग्र बनाने पर बल देती है। इस दृष्टिकोण से संगीत केवल कला-विषय न होकर अधिगम का एक प्रभावी माध्यम है, जो विभिन्न विषयों की अवधारणाओं को सरल, रोचक, अनुभवपरक एवं दीर्घकालिक बनाता है। संगीत के माध्यम से विद्यार्थी केवल स्वर, लय और ताल ही नहीं सीखते, बल्कि भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन तथा अन्य विषयों की जटिल अवधारणाओं को भी सहज रूप से आत्मसात करते हैं।

शैक्षिक अनुसंधानों से यह प्रमाणित हुआ है कि संगीत मस्तिष्क के अनेक क्षेत्रों को एक साथ सक्रिय करता है, जिससे स्मरण शक्ति, ध्यान, तर्क क्षमता, रचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान कौशल तथा भावनात्मक संतुलन का विकास होता है। लय और ताल गणितीय प्रतिरूपों की समझ विकसित करते हैं, गीत भाषा कौशल एवं शब्दावली को समृद्ध करते हैं, जबकि लोकगीत, देशभक्ति गीत एवं सांस्कृतिक संगीत इतिहास, भूगोल और सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत से विद्यार्थियों का परिचय कराते हैं। इसी प्रकार प्रकृति, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक घटनाओं पर आधारित गीत विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन को अधिक जीवन्त और अनुभवात्मक बनाते हैं।

संगीत का समेकन विषयों के स्थानापन्न के रूप में नहीं, बल्कि अधिगम को अधिक प्रभावी, आनंददायक और अर्थपूर्ण बनाने वाली एक शिक्षण रणनीति है। यह विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाता है, विविध अधिगम शैलियों का सम्मान करता है तथा समावेशी शिक्षा को सुदृढ़ बनाता है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों सहित सभी शिक्षार्थियों के लिए संगीत प्रेरणा, आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनता है।

अतः विद्यालयी शिक्षा में विभिन्न विषयों के साथ संगीत का समेकन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, रचनात्मकता, सहयोगात्मक अधिगम, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा 21वीं सदी के आवश्यक कौशलों के विकास की दिशा में एक प्रभावी एवं वैज्ञानिक पहल है। यह अध्याय शिक्षकों को विभिन्न विषयों में संगीत के सार्थक एवं व्यवहारिक समेकन हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है, ताकि शिक्षण प्रक्रिया अधिक जीवंत, सहभागितापूर्ण एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बन सके।





विज्ञान में संगीत का समेकन (Chemistry & Physics)

- **रसायन विज्ञान** के Periodic Table को स्वरबद्ध और लयबद्ध कर आसानी से याद करवाया जा सकता है। जैसे:- पहले हम आवर्त सारणी के 20 तत्व को सरल लय में बताएंगे।



हाइड्रोजन, हीलियम, सबसे पहले जान
लिथियम, बेरिलियम, बढ़ते जाएं मान।
बोरॉन, कार्बन, नाइट्रोजन संग
ऑक्सीजन, फ्लोरीन, नियॉन के रंग।
सोडियम, मैग्नीशियम, एल्यूमीनियम के साथ
सिलिकॉन, फॉस्फोरस, सल्फर की बात।
क्लोरीन, ऑर्गन फिर याद करवाएं
पोटैशियम, कैल्शियम हो गया तैयार।

इस रासायनिक कविता को धुन में सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें

इसी तरह से पूरी 118 तत्वों की आवर्त सारणी को पूरे कविता/गीत के रूप से रुचिकर तरीके से बच्चों को बता सकते हैं।

- **भौतिकी विषय** में (आवाज़) और (कंपन) स्वर की ऊँचाई और तीव्रता को लय एवं स्वर के माध्यम से बताया जा सकता है।

उदाहरण :- पाठः- प्रकाश का परावर्तन

रोशनी की, प्यारी किरण,
सीधी सी चलती जाए
दर्पण से जब टकराए,
रास्ता एक नया अपनाए
आने वाली किरण,
आपतित कहलाए,
लौटने वाली किरण,
परावर्तित कहलाए।



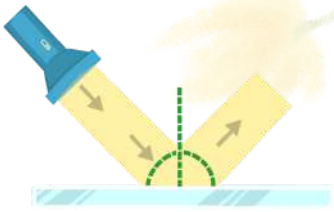





- **जीव विज्ञान :** कक्षा 10 के जीव विज्ञान में सबसे बड़ा एक अध्याय है जीवन प्रक्रियाएँ (Life Processes)। इस अध्याय में पाचन, श्वसन, रक्त परिसंचरण और उत्सर्जन शामिल है। इन सभी को गीत से इस प्रकार समझाया जा सकता है।

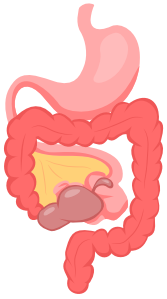

जीवन की हर प्रक्रिया, शरीर को चलाए
विज्ञान की ये प्यारी बातें, गीतों से समझाएं ।
मुख से भोजन अंदर जाए, दाँत उसे चबाएं
लार मिलाकर भोजन को पेट तक पहुँचाएं।
अमाशय फिर पाचन करता, रस अपना मिलाता
छोटी आँत में पोषण लेकर शरीर बल पाता।
जीवन की हर प्रक्रिया, शरीर को चलाए,
विज्ञान की ये प्यारी बातें, गीतों से समझाएं।



इसी प्रकार पाचन, श्वसन, रक्त परिसंचरण और उत्सर्जन के प्रक्रियाओं को गीत संगीत के माध्यम से पढ़ाया एवं याद करवाया जा सकता है।

गणित में संगीत का समेकन

गणित और संगीत का गहरा संबंध है। संगीत में लय, ताल, मात्रा, समय, अनुपात, भिन्न, पैटर्न और क्रम जैसे अनेक गणितीय सिद्धांत निहित होते हैं। संगीत के माध्यम से गणित को रोचक, अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित बनाया जा सकता है। **जैसे-** कक्षा 10th के किताब में एक अध्याय है त्रिकोणमिति (Trigonometry), को संगीत के माध्यम से इस प्रकार से याद करवाया जा सकता है:-

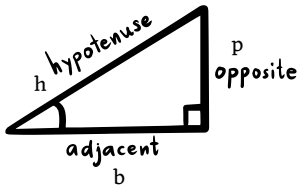

sin बराबर सामने भुजा, कर्ण से इसका नाता
cos बराबर आधार भुजा, कर्ण से समझ आता
tan बराबर सामने भुजा, आधार से मिल जाता
गणित अगर संगीत बने, हर बच्चा मुस्कुराता

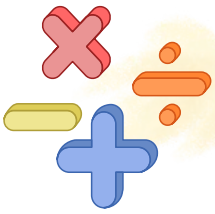

इसके अतिरिक्त कक्षा 9-10th के गणित में मुख्य रूप से 8 (Algebraic Identities) बीजगणितीय सर्वसमिकाएं उपयोग होती हैं। इन्हें आसानी से सीखाया जा सकता है, **उदाहरण:**

1. $(a + b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$
2. $(a - b)^2 = a^2 - 2ab + b^2$
3. $(a + b)(a - b) = a^2 - b^2$
4. $(x + a)(x + b) = x^2 + (a + b)x + ab$
5. $(a + b)^3 = a^3 + 3a^2b + 3ab^2 + b^3$
6. $(a - b)^3 = a^3 - 3a^2b + 3ab^2 - b^3$
7. $a^3 + b^3 = (a + b)(a^2 - ab + b^2)$
8. $a^3 - b^3 = (a - b)(a^2 + ab + b^2)$



एक सूत्र को लेंगे: (a + b)^2 = ?
गीत के माध्यम से ऐसे सिखाया जा सकता है:

ए प्लस बी का वर्ग है भाई,
ए स्क्वायर सबसे पहले आई।
टू ए बी फिर बीच में भाया,
बी स्क्वायर अंत में समाया।

इसी प्रकार (a - b)^2 एवं पूरे गणित के सूत्र को गीत के माध्यम से रुचिकर ढंग से पढ़ाया एवं याद करवाया जा सकता है।



भाषा में संगीत का समेकन

भाषा शिक्षण को संगीत के माध्यम से अधिक प्रभावी, रोचक एवं अनुभवात्मक बनाया जा सकता है। गीत, कविताएँ, दोहे, लोकगीत, बालगीत तथा लयबद्ध गतिविधियाँ विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं। संगीत के साथ कविता का गायन करने से उच्चारण, स्वराघात, लय, शब्दावली, पठन कौशल, श्रवण कौशल तथा अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है। इसके साथ ही विद्यार्थी कविता के भाव, रस, अलंकार एवं संदेश को अधिक गहराई से समझ पाते हैं। **उदाहरण:** कोंपल (9th, हिंदी)

- **मैं नीर भरी दुख की बदली (महादेवी वर्मा)**

मैं नीर भरी दुख की बदली!

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

मेरा पग-पग संगीत भरा
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा
नभ के नव रंग बुनते दुकूल
छाया में मलय-बयार पली।...



आकलन

संगीत शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को गायन, वादन एवं अपनी संस्कृति के प्रति समझ और सम्मान के साथ उनके समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी है। संगीत विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं और विचारों को रचनात्मक ढंग से व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान करता है। इसीलिए संगीत विषय में आकलन केवल लिखित परीक्षा या सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों के गायन, वादन, स्वर, लय, ताल, श्रवण कौशल, रचनात्मकता, सहभागिता, नियमित अभ्यास और प्रस्तुति कौशल को भी आकलन का महत्वपूर्ण आधार बनाया जाना चाहिए।

आकलन

आकलन एक निरंतर प्रक्रिया है। शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों के गायन, वादन, ताल-लय की समझ, सहभागिता और अभ्यास को देखकर उनकी प्रगति का आकलन कर सकते हैं। आकलन का उद्देश्य विद्यार्थियों की तुलना करना ही नहीं, बल्कि यह जानना है कि उन्होंने क्या सीखा है और उन्हें आगे सीखने के लिए किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है।

संगीत शिक्षा में शिक्षक निम्नलिखित बातों का ध्यान रख सकते हैं:

- **विद्यार्थी गीत को सही स्वर और लय में गा पा रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी ताल को समझकर ताली या वाद्ययंत्र के साथ ताल मिला पा रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी गीत के शब्दों का सही उच्चारण कर पा रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी संगीत को ध्यानपूर्वक सुनकर उसमें अंतर पहचान पा रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी समूह में मिलकर कार्य कर रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी संगीत गतिविधियों में रुचि और उत्साह के साथ भाग ले रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी मंच या कक्षा में आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति दे पा रहा है या नहीं।**
- **विद्यार्थी नियमित रूप से अभ्यास कर रहा है या नहीं।**



आकलन के तरीके

संगीत विषय में आकलन के लिए निम्नलिखित तरीकों का प्रयोग किया जा सकता है :

- **अवलोकन द्वारा आकलन :** शिक्षक विद्यार्थियों की गतिविधियों और अभ्यास को देखकर उनकी प्रगति का आकलन करें।
- **प्रस्तुति आधारित आकलन :** विद्यार्थियों से एकल या समूह में गीत गवाकर अथवा वाद्ययंत्र बजवाकर आकलन किया जाए।
- **श्रवण गतिविधि :** विभिन्न ध्वनियों, स्वरों और वाद्ययंत्रों को सुनाकर उनकी पहचान कराई जाए।
- **व्यावहारिक गतिविधि :** ताली के माध्यम से ताल पहचानना, सरल लय दोहराना या धुन गाना।
- **स्व-मूल्यांकन :** विद्यार्थी स्वयं सोचें कि उन्होंने क्या अच्छा किया और किस क्षेत्र में उन्हें अधिक अभ्यास की आवश्यकता है।
- **पोर्टफोलियो :** विद्यार्थी की प्रस्तुतियों, गतिविधियों, रचनाओं और प्रगति का रिकॉर्ड रखा जा सकता है।

आकलन के प्रमुख आधार

संगीत विषय में विद्यार्थियों का आकलन निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है :

- **स्वर:** विद्यार्थी सही सुर में गा पा रहा है या नहीं।
- **लय एवं ताल:** विद्यार्थी गीत या वादन में लय बनाए रख पा रहा है या नहीं।
- **उच्चारण:** गीत के शब्दों का स्पष्ट और सही उच्चारण।
- **अभिव्यक्ति:** गीत को भाव और आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करना।
- **सहभागिता:** संगीत गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना।
- **रचनात्मकता:** अपनी धुन, ताल या संगीत संबंधी विचार प्रस्तुत करने का प्रयास।
- **अनुशासन:** नियमित अभ्यास और वाद्ययंत्रों की उचित देखभाल।



संगीत एवं कला समेकित शिक्षा हेतु आकलन रूब्रिक्स

आकलन मानदंड	स्तर 4 (उत्कृष्ट)	स्तर 3 (अच्छा)	स्तर 2 (संतोषजनक)	स्तर 1 (सुधार अपेक्षित)
सक्रिय सहभागिता	सभी गतिविधियों में उत्साहपूर्वक एवं नियमित भागीदारी करता/करती है।	अधिकांश गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी	सीमित भागीदारी	भागीदारी बहुत कम
रचनात्मकता एवं मौलिकता	नवीन, मौलिक एवं सृजनात्मक विचारों का प्रभावी प्रदर्शन करता/करती है।	अच्छे रचनात्मक प्रयास करता/करती है	सीमित रचनात्मकता प्रदर्शित करता/ करती है	दूसरों पर अधिक निर्भर रहता/रहती है
कला कौशल	उत्कृष्ट कला कौशल एवं तकनीकी दक्षता का प्रदर्शन करता/ करती है।	अच्छा कौशल एवं प्रदर्शन	मूलभूत कौशल प्रदर्शित करता/करती है	अधिक अभ्यास की आवश्यकता
विषय–वस्तु से एकीकरण	कला एवं विषय-वस्तु का प्रभावी एवं सार्थक समन्वय प्रस्तुत करता/करती है।	अच्छा समन्वय	आंशिक समन्वय	समन्वय स्पष्ट नहीं
सहयोग एवं टीमवर्क	समूह में नेतृत्व करते हुए उत्कृष्ट सहयोग एवं सहभागिता प्रदर्शित करता/करती है।	सभी के साथ अच्छा सहयोग	कभी-कभी सहयोग करता/करती है	सहयोग करने में कठिनाई
प्रस्तुतीकरण कौशल	आत्मविश्वासपूर्ण, स्पष्ट एवं प्रभावशाली प्रस्तुति देता/देती है।	अच्छी प्रस्तुति	सामान्य प्रस्तुति	प्रस्तुति में सुधार अपेक्षित
संचार कौशल	विचारों एवं भावों को स्पष्ट, प्रभावी एवं सुसंगत रूप से व्यक्त करता/करती है।	अधिकांशतः स्पष्ट अभिव्यक्ति	सीमित अभिव्यक्ति	विचार व्यक्त करने में कठिनाई
अनुशासन एवं संसाधनों का उचित उपयोग	सभी संसाधनों एवं वाद्य यंत्रों का सुरक्षित, जिम्मेदारीपूर्ण एवं उचित उपयोग करता/ करती है।	सामान्यतः सही उपयोग	कभी-कभी मार्गदर्शन की आवश्यकता	संसाधनों के उपयोग में सुधार अपेक्षित



आकलन हेतु चेकलिस्ट

विद्यार्थी का नामः ..... कक्षाः .....

आकलन बिंदु	हाँ	आंशिक रूप से	सहायता आवश्यक
• विद्यार्थी गीत के शब्द सही बोलता/गाता है।	O	O	O
• विद्यार्थी सही स्वर में गाने का प्रयास करता है।	O	O	O
• विद्यार्थी लय और ताल का पालन करता है।	O	O	O
• विद्यार्थी ताल के साथ ताली या वाद्ययंत्र बजा पाता है।	O	O	O
• विद्यार्थी ध्यानपूर्वक संगीत सुनता है।	O	O	O
• विद्यार्थी संगीत गतिविधियों में रुचि से भाग लेता है।	O	O	O
• विद्यार्थी समूह में मिल-जुलकर कार्य करता है।	O	O	O
• विद्यार्थी प्रस्तुति के समय आत्मविश्वास दिखाता है।	O	O	O
• विद्यार्थी नियमित रूप से अभ्यास करता है।	O	O	O
• विद्यार्थी संगीत में अपनी रचनात्मकता दिखाता है।	O	O	O



अधिगम प्रतिफल

अधिगम प्रतिफल से आशय उन ज्ञान, कौशल, समझ, क्षमताओं और व्यवहारों से है, जिन्हें विद्यार्थी किसी पाठ, गतिविधि या सीखने की प्रक्रिया के दौरान प्राप्त करता है। सरल शब्दों में, विद्यार्थी क्या सीखता है और सीखने के बाद वह क्या करने में सक्षम होता है। इसी को अधिगम प्रतिफल कहा जाता है।
संगीत शिक्षा में अधिगम प्रतिफल के अंतर्गत विद्यार्थी द्वारा स्वर, लय, ताल, गायन, वादन, श्रवण, रचनात्मकता और प्रस्तुति से संबंधित अर्जित ज्ञान एवं कौशल शामिल होते हैं।

संगीत शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में निम्नलिखित अधिगम प्रतिफल विकसित होते हैं :

विद्यार्थी :

- **सरल गीतों को सही स्वर और लय में गाते हैं।**
- **सरल ताल और लय को पहचानते हैं।**
- **ताल के साथ ताली बजाते हैं या वाद्ययंत्र बजाते हैं।**
- **विभिन्न वाद्ययंत्रों और उनकी ध्वनियों को पहचानते हैं।**
- **ध्यानपूर्वक संगीत सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।**
- **एकल एवं समूह में संगीत प्रस्तुति देते हैं।**
- **संगीत के माध्यम से अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं।**
- **संगीत गतिविधियों में रुचि और आत्मविश्वास के साथ भाग लेते हैं।**
- **नियमित अभ्यास, अनुशासन और सहयोग के महत्व को समझते हैं।**
- **भारतीय संगीत, लोकगीतों और स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति सम्मान विकसित करते हैं।**





प्रस्तुति के लिए मंचीय अवसर

संगीत शिक्षा में विद्यार्थियों को अपनी सीखी हुई कला और प्रतिभा को प्रस्तुत करने के लिए नियमित रूप से मंचीय अवसर प्रदान करना आवश्यक है। मंचीय प्रस्तुति विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे विद्यार्थियों को अपने ज्ञान और कौशल को व्यवहार में लाने का अवसर मिलता है तथा उनके आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति, अनुशासन और सहयोग की भावना का विकास होता है।

विद्यालय में विद्यार्थियों को विभिन्न अवसरों पर संगीत प्रस्तुति के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। चेतना सत्र, राष्ट्रीय पर्व, विद्यालय के वार्षिकोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विशेष दिवस, विभिन्न उत्सव, प्रतियोगिताओं तथा अन्य विद्यालयी आयोजनों में विद्यार्थियों को गायन, वादन और समूह प्रस्तुति के अवसर दिए जा सकते हैं।

मंचीय अवसर केवल उन विद्यार्थियों तक सीमित नहीं होने चाहिए, जो पहले से ही अच्छा गाते या वाद्ययंत्र बजाते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, क्षमता और स्तर के अनुसार उसे प्रस्तुति का अवसर मिलना चाहिए। कोई विद्यार्थी एकल गायन कर सकता है, कोई समूह गान में भाग ले सकता है, तो कोई वाद्ययंत्र, ताल या अन्य संगीत गतिविधि के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रस्तुत कर सकता है।

मंचीय प्रस्तुति से पहले विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास और आवश्यक मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। शिक्षक को प्रस्तुति के लिए उपयुक्त गीत, संगीत और गतिविधि का चयन विद्यार्थियों की आयु, क्षमता और कार्यक्रम की आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए। अभ्यास के दौरान विद्यार्थियों को स्वर, लय, ताल, उच्चारण, भाव-भंगिमा और मंच पर प्रस्तुति देने के तरीके का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

मंच पर प्रस्तुति देते समय विद्यार्थियों में आत्मविश्वास विकसित करने के लिए शिक्षक का प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि किसी विद्यार्थी से प्रस्तुति के दौरान कोई गलती हो जाए, तो उसे हतोत्साहित करने के बजाय सहजता से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को यह समझाना आवश्यक है कि मंचीय प्रस्तुति केवल प्रतियोगिता या पुरस्कार प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सीखने, अभ्यास करने और अपनी प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर है।

मंचीय अवसरों के माध्यम से विद्यार्थियों में निम्नलिखित गुणों का विकास होता है :

- आत्मविश्वास और प्रभावी अभिव्यक्ति।
- मंच पर प्रस्तुति देने की क्षमता।
- अनुशासन और नियमित अभ्यास की आदत।
- समूह में सहयोग एवं समन्वय की भावना।
- नेतृत्व क्षमता और जिम्मेदारी की भावना।
- अपनी प्रतिभा और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर।
- दूसरों की प्रस्तुति का सम्मान करने की भावना।



विद्यालय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि संगीत शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को समय-समय पर अपनी क्षमता के अनुसार मंचीय अवसर प्राप्त हो। मंचीय प्रस्तुति के बाद विद्यार्थियों को सकारात्मक और रचनात्मक प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए, ताकि वे अपनी कमियों को सुधार सकें और भविष्य में बेहतर प्रदर्शन कर सकें।

इस प्रकार, मंचीय अवसर संगीत शिक्षा को कक्षा और अभ्यास तक सीमित न रखकर विद्यार्थियों को वास्तविक अनुभव, आत्मविश्वास और अपनी प्रतिभा के विकास का अवसर प्रदान करते हैं।



प्रधानाध्यापक की भूमिका

विद्यालय में संगीत शिक्षा की गुणवत्ता केवल संगीत शिक्षक के प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि प्रधानाध्यापक की सक्रिय भूमिका, दूरदर्शी नेतृत्व तथा आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर भी समान रूप से आधारित होती है। प्रधानाध्यापक द्वारा उचित योजना, आवश्यक संसाधन और सकारात्मक वातावरण उपलब्ध कराने से संगीत शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

प्रधानाध्यापक को संगीत शिक्षा के लिए वार्षिक एवं मासिक स्तर पर उचित योजना तैयार करनी चाहिए। विद्यार्थियों को नियमित रूप से संगीत सीखने, अभ्यास करने और अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

प्रधानाध्यापक की प्रमुख भूमिका निम्नलिखित है:

- **विद्यालय में संगीत शिक्षा के लिए नियमित समय और उचित व्यवस्था सुनिश्चित करना।**
- **आवश्यक वाद्ययंत्रों, संगीत सामग्री और अन्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।**
- **वाद्ययंत्रों और संगीत सामग्री के सुरक्षित रख-रखाव की व्यवस्था करना और आवश्यकतानुसार वाद्ययंत्रों का मरम्मत कराना।**
- **संगीत प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की सहभागिता को प्रोत्साहित करना।**
- **संगीत शिक्षा से संबंधित गतिविधियों का उचित अभिलेख एवं पोर्टफोलियो तैयार करवाना।**
- **शिक्षकों को आवश्यक प्रशिक्षण एवं सहयोग उपलब्ध कराना।**
- **अभिभावकों को भी विद्यार्थियों की संगीत प्रतिभा और उपलब्धियों से अवगत कराना।**
- **प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक घंटी संगीत विषय हेतु अनिवार्य रूप से दिया जाना सुनिश्चित करें जिसमें सभी विद्यार्थी (जिन्होंने संगीत को विषय के रूप में चयन किया हो अथवा संगीत को विषय के रूप में चयन नहीं किया हो) सीखेंगें।**
- **संगीत विषय के छात्रों के लिए प्रतिदिन एक घंटी देना सुनिश्चित करें।**



प्रधानाध्यापक हेतु सुझाव

एक सहयोगी एवं संवेदनशील प्रशासनिक व्यवस्था संगीत शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करती है, जिससे विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मक क्षमता, कलात्मक अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक चेतना को विकसित करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं।

प्रभावी योजना, संसाधनों का समुचित प्रबंधन, शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, विद्यार्थियों को मंच उपलब्ध कराने तथा समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करने के माध्यम से प्रधानाध्यापक संगीत शिक्षा को अधिक जीवंत, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण बना सकता है। इसी उद्देश्य से निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जो विद्यालयों में संगीत शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन एवं कला-समेकित अधिगम को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :

1. संगीत शिक्षा को विद्यालय की नियमित शैक्षणिक गतिविधियों का अभिन्न अंग बनाया जाए तथा समय-सारिणी में इसके लिए पर्याप्त समय सुनिश्चित किया जाए।
2. सुसज्जित संगीत कक्ष की व्यवस्था की जाए, जिसमें आवश्यक वाद्य यंत्र (हारमोनियम, तबला, ढोलक, मंजीरा, बाँसुरी, कीबोर्ड आदि), ध्वनि प्रणाली तथा डिजिटल शिक्षण संसाधन उपलब्ध हों।
3. संगीत शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाओं एवं क्षमता विकास कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाएँ, ताकि वे नवीन शिक्षण विधियों एवं तकनीकों से परिचित हो सकें।
4. विद्यालय में कला समेकित शिक्षा को बढ़ावा देते हुए संगीत का समेकन भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयों के साथ किया जाए।
5. चेतना सत्र, राष्ट्रीय पर्व, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य विद्यालयी आयोजनों में विद्यार्थियों को संगीत आधारित प्रस्तुतियों के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाएँ।
6. विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास हेतु विद्यालय, प्रखंड, जिला एवं राज्य स्तर की संगीत प्रतियोगिताओं में सहभागिता के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
7. संगीत कक्ष एवं वाद्य यंत्रों के रख-रखाव, मरम्मत एवं नियमित उपयोग के लिए आवश्यक बजट एवं संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ।
8. स्थानीय लोकसंगीत, लोकनृत्य एवं सांस्कृतिक विरासत को विद्यालयी गतिविधियों में स्थान देकर विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ा जाए।
9. संगीत शिक्षण में आईसीटी (ICT) का उपयोग बढ़ाया जाए। स्मार्ट बोर्ड, ऑडियो-वीडियो सामग्री, डिजिटल ऐप एवं ऑनलाइन संसाधनों का प्रभावी प्रयोग किया जाए।
10. विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन केवल प्रस्तुति के आधार पर नहीं, बल्कि रुचि, सहभागिता, रचनात्मकता, अभ्यास, सहयोगात्मक कार्य एवं अभिव्यक्ति जैसे विभिन्न आयामों पर किया जाए।
11. अभिभावकों एवं स्थानीय कलाकारों की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए समय-समय पर संगीत कार्यशालाएँ, प्रदर्शनियाँ एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
12. समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों के अनुरूप दिव्यांग एवं विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को भी संगीत गतिविधियों में समान अवसर एवं आवश्यक सहयोग प्रदान किया जाए।

ये सुझाव विद्यालय में संगीत शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, अनुभवात्मक तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अनुरूप प्रभावी बनाने में सहायक होंगे।





क्या करें ?

- प्रत्येक कक्षा की शुरुआत 5–10 मिनट के सांगीतिक गतिविधियाँ जैसे- स्वराभ्यास, हमिंग, आदि से करें
- विद्यार्थियों की आवाज़ (VOICE RANGE) के अनुसार स्वर निर्धारित करें
- स्वर, लय और ताल पर विशेष ध्यान दें
- हारमोनियम, तबला एवं अन्य वाद्य यंत्रों का उपयोग करें
- सभी विद्यार्थियों को समान अवसर दें
- एकल/समूह गायन, वादन एवं नृत्य का अभ्यास कराएँ
- स्थानीय लोक संगीत एवं भारतीय सांगीतिक धरोहर को शिक्षण में शामिल करें
- नियमित रूप से विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करें
- वाद्ययंत्रों का उपयोग करने के बाद उनकी सफाई एवं सुरक्षित रख-रखाव सुनिश्चित करें



क्या न करें?

- वाद्य यंत्रों को उपयोग के बाद बिखरा हुआ या असुरक्षित न छोड़ें
- कक्षा को अनियंत्रित न होने दें
- स्वर, लय एवं ताल की त्रुटियों को अनदेखा न करें
- विद्यार्थियों को गलत मुद्रा में अभ्यास न करने दें
- फूहड़ एवं अश्लील गानों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल न करें
- कक्षा में अत्यधिक तेज़ ध्वनि वाले स्पीकर का उपयोग न करें
- अभ्यास के दौरान पानी पीने एवं आवाज़ को आराम देने की आवश्यकता को नज़रअंदाज़ न करें



प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

- **क्या संगीत शिक्षा केवल अच्छा गाने वाले विद्यार्थियों के लिए है?**

उत्तर: नहीं। संगीत शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए है। हर विद्यार्थी की क्षमता और रुचि अलग होती है। सभी विद्यार्थियों को सीखने, अभ्यास करने और अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर मिलना चाहिए।

- **संगीत शिक्षा में किन गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है?**

उत्तर: गायन, वाद्ययंत्र वादन, ताल एवं लय का अभ्यास, श्रवण गतिविधियाँ, समूह गान, लोकगीत, प्रार्थना गीत और विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को शामिल किया जा सकता है।

- **संगीत विषय में विद्यार्थियों का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा?**

उत्तर: विद्यार्थियों का मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। गायन, वादन, स्वर, लय, ताल, श्रवण कौशल, रचनात्मकता, सहभागिता, नियमित अभ्यास और प्रस्तुति को भी मूल्यांकन का आधार बनाया जाना चाहिए।

- **क्या प्रत्येक विद्यार्थी को मंच पर प्रस्तुति का अवसर मिलना चाहिए?**

उत्तर: हाँ। प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी रुचि और क्षमता के अनुसार मंचीय प्रस्तुति का अवसर मिलना चाहिए। इससे आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति और सहयोग की भावना का विकास होता है।

- **यदि कोई विद्यार्थी अच्छा नहीं गा या बजा नहीं पाता है तो क्या उसे संगीत गतिविधियों में शामिल किया जाना चाहिए?**

उत्तर: बिल्कुल। संगीत शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को आगे बढ़ाना नहीं है। अभ्यास और प्रोत्साहन से प्रत्येक विद्यार्थी अपनी क्षमता में सुधार कर सकता है।

- **क्या संगीत शिक्षा में केवल आधुनिक संगीत को शामिल किया जाना चाहिए?**

उत्तर: नहीं। विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, स्थानीय लोकगीत और आधुनिक संगीत की विभिन्न शैलियों से परिचित कराया जा सकता है।

- **संगीत शिक्षा में गलतियों के प्रति शिक्षक का व्यवहार कैसा होना चाहिए?**

उत्तर: गलतियों को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा माना जाना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों को डाँटने या हतोत्साहित करने के बजाय सकारात्मक प्रतिक्रिया और सुधार के अवसर देने चाहिए।

- **क्या संगीत शिक्षा को अन्य विषयों से जोड़ा जा सकता है?**

उत्तर: हाँ। संगीत को भाषा, कला, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण और अन्य विषयों के साथ जोड़कर शिक्षण-अधिगम को अधिक रोचक और प्रभावी बनाया जा सकता है।

- **संगीत शिक्षा को सफल बनाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या है?**

उत्तर: संगीत शिक्षा की सफलता के लिए नियमित अभ्यास, उचित मार्गदर्शन, सकारात्मक वातावरण, पर्याप्त अवसर और विद्यार्थियों का निरंतर प्रोत्साहन सबसे महत्वपूर्ण है।

- **संगीत शिक्षा में विद्यालय का सकारात्मक वातावरण क्यों आवश्यक है?**

उत्तर: सकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों को बिना डर और झिझक के सीखने तथा अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करता है। प्रोत्साहन और सहयोग मिलने पर विद्यार्थी संगीत गतिविधियों में अधिक रुचि और आत्मविश्वास के साथ भाग लेते हैं।





संदर्भ सूची

1. **कला-समेकित अधिगम दिशानिर्देश (माध्यमिक स्तर) : NCERT**

यह NCERT द्वारा प्रकाशित दिशानिर्देश पुस्तिका है, जिसमें माध्यमिक स्तर पर कला-समेकित अधिगम के सिद्धांतों, प्रक्रियाओं एवं क्रियान्वयन संबंधी सुझावों का वर्णन किया गया है। यह शिक्षकों को विभिन्न विषयों के शिक्षण में कला के समावेश द्वारा अधिगम को रचनात्मक, अनुभवात्मक एवं प्रभावी बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

लिंक: https://ncert.nic.in/pdf/announcement/AILG-Secondary-English.pdf

2. **NCERT पाठ्यपुस्तक : मधुरिमा (कक्षा-9)**

NCERT द्वारा प्रकाशित 'मधुरिमा' कक्षा 9 की कला शिक्षा की पाठ्यपुस्तक है। इसमें दृश्य कला, संगीत, नृत्य एवं रंगमंच के साथ भारतीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन शामिल है।

लिंक: https://ncert.nic.in/textbook.php?iemr1=0-17

3. **NCERT पाठ्यपुस्तक : हिंदुस्तानी संगीत - गायन एवं वादन (कक्षा 11)**

यह NCERT द्वारा प्रकाशित कक्षा 11 की संगीत विषय की पाठ्यपुस्तक है, जिसमें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का वर्णन किया गया है। इसमें राग, ताल, स्वर-लिपि पद्धतियों, संगीत के आधार ग्रंथों, वाद्य वर्गीकरण तथा प्रमुख संगीत घरानों से संबंधित विषय शामिल हैं।

लिंक: https://ncert.nic.in/textbook.php?khgv1=0-10





4. NCERT पाठ्यपुस्तक : संगीत – तबला एवं पखावज (कक्षा 11)

यह NCERT द्वारा प्रकाशित कक्षा 11 की संगीत विषय की पाठ्यपुस्तक है, जिसमें तबला एवं पखावज वादन के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन कराया जाता है। इसमें भारतीय ताल पद्धति, लयकारी, तालों की संरचना तथा वादन संबंधी ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों की संगीतात्मक समझ एवं कौशल विकसित करने पर बल दिया गया है।

लिंक: https://ncert.nic.in/textbook.php?khtp1=0-8

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (अंग्रेज़ी एवं हिन्दी संस्करण)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसमें समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कला एवं संस्कृति के समावेश पर विशेष बल दिया गया है।

लिंक (अंग्रेज़ी) : https://ncert.nic.in/pdf/nep/NEP_2020.pdf
लिंक (हिंदी) : https://ncert.nic.in/pdf/nep/NEP_final_HINDI.pdf

6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2023

यह दस्तावेज़ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा से संबंधित है, जो विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या निर्माण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसका उद्देश्य शिक्षा को विद्यार्थियों के समग्र विकास, रचनात्मकता एवं अनुभवात्मक अधिगम से जोड़ना है।

लिंक (अंग्रेज़ी) : https://ncf.ncert.gov.in/webadmin/assets/1f0eb504-c745-4698-a085-927dca547963
लिंक (हिंदी) : https://ncf.ncert.gov.in/webadmin/assets/a538964e-f826-4946-aa0c-08804d8471c8





राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना द्वारा विकसित